

प्रारंभिक परीक्षा

वोस्ट्रो खाते(Vostro Accounts)

संदर्भ

भारत के RBI ने 'वोस्ट्रो' खातों को संपूर्ण अधिशेष राशि सरकारी प्रतिभूतियों में निवेश करने की अनुमति दी।

वोस्ट्रो खाता क्या है?

- यह एक प्रकार का बैंक खाता है जिसे एक बैंक किसी विदेशी बैंक की ओर से उस देश की स्थानीय मुद्रा में रखता है जहाँ खाता संचालित किया जाता है।
- उदाहरण के लिए, बैंक ऑफ अमेरिका भारत में एसबीआई के साथ एक INR खाता खोलता है।
- आरबीआई (वित्त मंत्रालय नहीं) ने परिचालन दिशानिर्देश जारी किए।
- लाभ:
 - विदेशी मुद्रा भंडार दबाव कम करता है।
 - भारतीय रुपये को अंतर्राष्ट्रीय निपटान मुद्रा के रूप में बढ़ावा देता है।
 - प्रतिबंधित/निषिद्ध देशों (जैसे, प्रतिबंधों के अधीन रूस) के साथ व्यापार जारी रखने में मदद करता है।

अंतर्राष्ट्रीय लेनदेन के लिए अन्य प्रकार के खाते -

खाते का प्रकार	अर्थ	उदाहरण	मुद्रा मूल्यवर्ग
नोस्ट्रो खाता	किसी घरेलू बैंक का विदेशी मुद्रा में किसी विदेशी बैंक में रखा गया खाता।	एसबीआई ने अमेरिका में बैंक ऑफ अमेरिका के साथ यूएसडी खाता खोला।	विदेशी मुद्रा (जैसे, USD)
लोरो खाता	एक घरेलू बैंक द्वारा किसी तीसरे बैंक की ओर से किसी अन्य घरेलू बैंक के साथ विदेशी मुद्रा में रखा गया खाता।	केनरा बैंक, नेशनल बैंक ऑफ हांगकांग के साथ बैंक ऑफ बड़ौदा के नोस्ट्रो खाते का उपयोग करता है।	विदेशी मुद्रा

स्रोत: [रॉयटर्स](#)

म्यूऑन g-2 (जी माइनस टू)

संदर्भ

अमेरिका के फर्मिलैब में म्यूऑन g-2 (उच्चारण "जी माइनस टू") प्रयोग ने म्यूऑन नामक एक उपपरमाण्विक कण के एक अद्वितीय गुण को 0.127 पीपीएम की अभूतपूर्व परिशुद्धता के साथ मापा था, जो इसके घोषित लक्ष्य 0.140 पीपीएम से अधिक था।

म्यूऑन क्या है?

- यह एक प्रकार का प्राथमिक कण (Elementary Particle) है — अर्थात् इसके कोई छोटे ज्ञात घटक नहीं होते।
- यह इलेक्ट्रॉन के समान परिवार (जिसे लेप्टॉन कहते हैं) से संबंधित है और विद्युत आवेश व स्पिन के संदर्भ में लगभग समान व्यवहार करता है।
- हालाँकि, इसमें कुछ प्रमुख अंतर हैं:
 - **द्रव्यमान (Mass)** – म्यूऑन का द्रव्यमान इलेक्ट्रॉन से लगभग 207 गुना अधिक होता है।
 - **खोज (Discovery)** – इसे सबसे पहले 1936 में कॉस्मिक किरणों (अंतरिक्ष से आने वाले उच्च-ऊर्जा कणों) में खोजा गया।
 - **चुंबकीय प्रकृति (Magnetic Nature)** – इलेक्ट्रॉन की तरह इसमें क्वॉंटम स्पिन नामक गुण होता है, जिससे यह एक छोटे बार मैग्नेट (द्विध्रुवीय चुंबक) की तरह व्यवहार करता है।

म्यूऑन g-2 क्या है?

- शास्त्रीय भौतिकी (Classical Physics) में, यदि आपके पास कोई आवेशित, घूमने वाली वस्तु (जैसे कोई घूमती हुई आवेशित गेंद) हो, तो वह एक चुंबकीय क्षेत्र उत्पन्न करती है।
- **g-फैक्टर एक अनुपात है:**
 - g = कण की वास्तविक चुंबकीय शक्ति / सरल सिद्धांत से अनुमानित शक्ति
- बिना किसी क्वॉंटम जटिलता वाले मूल, बिंदु-सदृश कण के लिए, सिद्धांत कहता है कि $g = 2$ ठीक है।
- **क्वॉंटम भौतिकी में कण कभी अकेले नहीं होते।**
- यहाँ तक कि रिक्त अंतरिक्ष में भी, कण लगातार वर्चुअल कणों से अंतःक्रिया करता रहता है — क्षणिक कण जो क्वॉंटम उतार-चढ़ाव के कारण आते-जाते रहते हैं।
- ये "भूतिया(ghost)" कण फोटॉन, ग्लूऑन, W/Z बोसॉन या फिर अज्ञात काल्पनिक कण भी हो सकते हैं।
- प्रत्येक ऐसी अंतःक्रिया कण की चुंबकीय शक्ति को थोड़ा बदल देती है।
- इन अंतःक्रियाओं के कारण म्यूऑन और इलेक्ट्रॉन के लिए g का मान 2 से थोड़ा अधिक हो जाता है।
- यदि g को भविष्यवाणी से अधिक सटीकता से मापा जाए और कोई अंतर मिले:
 - या तो स्टैंडर्ड मॉडल (Standard Model) की गणना में कुछ कमी है,
 - या नए, अज्ञात कण/बल इस बदलाव में योगदान दे रहे हैं।
- यही कारण है कि **म्यूऑन g-2** रोमांचक है — क्योंकि म्यूऑन इतना भारी है कि यह संभावित नई भौतिकी के प्रति संवेदनशील हो सकता है।

म्यूऑन g-2 प्रयोग क्या मापता है -

- यह प्रयोग दो आवृत्तियों (frequencies) के बीच के अंतर को मापता है:
 - **कक्षीय आवृत्ति (Orbit frequency)** – म्यूऑन चुंबकीय क्षेत्र में कितनी तेज़ी से गति करता है।
 - **स्पिन प्रीसेशन आवृत्ति (Spin precession frequency)** – उस क्षेत्र में म्यूऑन की स्पिन धुरी कितनी तेज़ी से घूमती है।
- यह अंतर म्यूऑन के $g-2$ मान को अत्यंत सटीकता के साथ प्रकट करता है।

स्रोत: द हिंदू

सैटेलाइट इंटरनेट कैसे काम करता है?

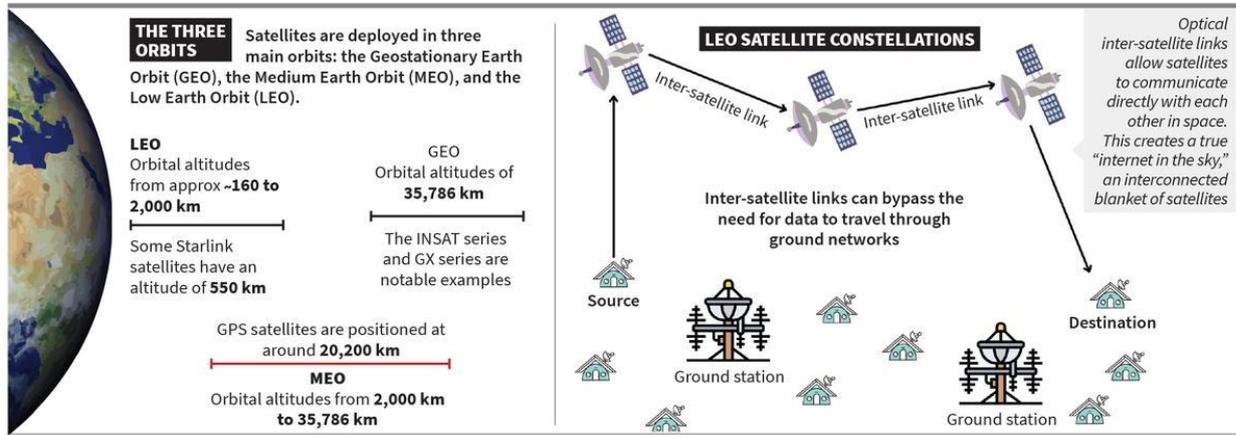
संदर्भ

सैटेलाइट इंटरनेट चर्चा में है, क्योंकि भारत एलन मस्क के स्टारलिनक के आगमन की तैयारी कर रहा है, जिससे कनेक्टिविटी में नया आयाम आने, डिजिटल विभाजन को कम करने और नागरिक तथा सैन्य संचार क्षमताओं में वृद्धि होने की उम्मीद है।

सैटेलाइट इंटरनेट क्या है?

- संचार उपग्रहों के माध्यम से इंटरनेट पहुँच प्रदान की जाती है।
- आमतौर पर 506 Mbit/s तक की गति प्रदान करने में सक्षम भूस्थिर उपग्रहों का उपयोग किया जाता है।
- इंटरनेट सिग्नल उपग्रहों को भेजे जाते हैं और घरेलू एंटीना किट द्वारा प्राप्त किए जाते हैं।

सैटेलाइट इंटरनेट कैसे काम करता है?



कार्यप्रणाली -

- **उपग्रह समूह (Satellite Constellation)** - पृथ्वी की निचली कक्षा (LEO), पृथ्वी की मध्यम कक्षा (MEO), या भूस्थिर कक्षा (GEO) में उपग्रहों के नेटवर्क का उपयोग करता है।
- **यूज़र टर्मिनल (डिश एंटीना)** - उपयोगकर्ता के स्थान पर लगाया जाता है; उपग्रहों से सिग्नल भेजता और प्राप्त करता है।
- **ग्राउंड स्टेशन (गेटवे)** - उपग्रहों को स्थलीय इंटरनेट बैकबोन से जोड़ते हैं।
- **डेटा प्रवाह (Data Flow)** - उपयोगकर्ता डिवाइस → डिश एंटीना → उपग्रह → ग्राउंड स्टेशन → इंटरनेट सर्वर (और इसके विपरीत)।
- **LEO का लाभ** - LEO उपग्रह **विलंबता(latency)** को ~20-40 ms तक घटा देते हैं, जबकि GEO उपग्रहों के लिए यह 600+ ms तक होती है।

सैटेलाइट इंटरनेट के लाभ -

- **डिजिटल विभाजन को कम करना** - दुनिया भर के दूरदराज और ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट तक पहुंच को सक्षम बनाता है।
- **तारों की आवश्यकता नहीं** - कठिन इलाकों में केबल बिछाने की कोई आवश्यकता नहीं।
- **समुद्री एवं दूरस्थ संचार** - महासागरों, रेगिस्तानों और पृथक क्षेत्रों में अच्छी तरह से काम करता है।
- **बेहतर सुरक्षा** - पारंपरिक केबल-आधारित प्रणालियों की तुलना में हैक करना कठिन।

सैटेलाइट इंटरनेट की कमियां -

- **अंतरिक्ष मलबा** - निष्क्रिय उपग्रह और उनके भाग कक्षीय कबाड़ में योगदान करते हैं।

- **खगोल विज्ञान पर प्रभाव** - उपग्रह समूह भू-आधारित दूरबीनों में हस्तक्षेप करते हैं।
- **अंतरिक्ष भीड़** - बड़े उपग्रह समूह (जैसे, स्टारलिनक के 12,000 उपग्रह) कक्षाओं में भीड़ लगाते हैं।
- **केसलर सिंड्रोम का खतरा** - टकराव से अधिक मलबा उत्पन्न हो सकता है, जिससे श्रृंखलाबद्ध प्रतिक्रिया शुरू हो सकती है।
- **उच्च विलंबता** - औसत राउंड-ट्रिप सिग्नल विलंब ~550 मिलीसेकंड है।
- **सिग्नल व्यवधान** - बारिश, बर्फ और नमी से प्रभावित।
- **उच्च लागत** - उपकरण और रखरखाव केबल इंटरनेट की तुलना में अधिक महंगे हैं।

प्रमुख विशेषताएँ -

- **वैश्विक कवरेज** - दूरस्थ, पहाड़ी, रेगिस्तानी या समुद्री क्षेत्रों को भी जोड़ सकता है।
- **हाई-स्पीड ब्रॉडबैंड** - 150-250 एमबीपीएस तक की गति (स्टारलिनक उदाहरण)।
- **कम विलंबता** - विशेष रूप से LEO उपग्रह समूह के साथ।
- **त्वरित तैनाती** - ऑप्टिकल फाइबर बिछाने की कोई आवश्यकता नहीं; कुछ घंटों में स्थापना।
- **स्केलेबल** - कवरेज का विस्तार करने के लिए नए उपग्रह जोड़े जा सकते हैं।
- **आपदाओं के प्रति लचीला** - बाढ़, भूकंप या केबल कट से कम प्रभावित।

अनुप्रयोग -

- **ग्रामीण एवं दूरस्थ कनेक्टिविटी** - फाइबर अवसंरचना के बिना गांव, द्वीप और सीमावर्ती क्षेत्र।
- **आपदा राहत** - भूकंप, बाढ़, चक्रवात के बाद संचार की त्वरित बहाली।
- **समुद्री एवं विमानन इंटरनेट** - जहाज, विमान और अपतटीय प्लेटफार्म।
- **रक्षा एवं सुरक्षा** - दूरस्थ क्षेत्रों में सशस्त्र बलों के लिए सुरक्षित, उच्च गति संचार।
- **वैज्ञानिक अनुसंधान** - ध्रुवीय स्टेशन, गहरे समुद्र मिशन और रेगिस्तान अनुसंधान स्टेशन।
- **IoT और स्मार्ट कृषि** - दूरस्थ क्षेत्रों में निगरानी, स्वचालन और सटीक खेती।

स्रोत: [द हिंदू](#)



लंबी दूरी की मिसाइलों का शस्त्रागार

संदर्भ

ऑपरेशन सिंदूर की सफलता के बाद, भारतीय वायु सेना (IAF) दुश्मन की वायु रक्षा प्रणालियों का मुकाबला करने के लिए 200 किलोमीटर से अधिक की मारक क्षमता वाली लंबी दूरी की हवा से जमीन और हवा से हवा में मार करने वाली मिसाइलों को शामिल करने पर ध्यान केंद्रित कर रही है।

भारतीय वायुसेना में लंबी दूरी की मिसाइल का प्रवेश - ऑपरेशन सिंदूर के बाद

- ब्रह्मोस(BrahMos)**
 - प्रकार: सुपरसोनिक कूज़ मिसाइल
 - मारक क्षमता: ~450 किमी (अपग्रेडेड संस्करण 250 किमी से अधिक)
 - भूमिका: भूमि और समुद्री लक्ष्यों पर सटीक प्रहार
 - विशेषता: भूमि, समुद्र और वायु प्लेटफॉर्म से प्रक्षेपित की जा सकती है
- SCALP**
 - प्रकार: लंबी दूरी की, वायु से दागी जाने वाली कूज़ मिसाइल
 - मारक क्षमता: ~250-300 किमी
 - उत्पत्ति: फ्रांस (राफेल विमान पर प्रयुक्त)
 - भूमिका: उच्च-मूल्य वाले लक्ष्यों पर गहराई में सटीक प्रहार
- Rampage**
 - प्रकार: वायु से दागी जाने वाली स्टैंडऑफ मिसाइल (इज़राइल मूल)
 - मारक क्षमता: ~150-250 किमी
 - भूमिका: हवाई अड्डों और अवसंरचना जैसे उच्च-मूल्य वाले रणनीतिक लक्ष्यों पर हमला
- Crystal Maze**
 - प्रकार: वायु से सतह पर मार करने वाली मिसाइल (इज़राइल मूल, AGM-142 Popeye भी कहलाती है)
 - मारक क्षमता: ~80-150 किमी
 - भूमिका: विशेष रूप से सुदृढ़ लक्ष्यों पर सटीक प्रहार
- अस्त्र (लॉन्ग-रेंज संस्करण)**
 - प्रकार: स्वदेशी बियाँन्ड-विजुअल-रेंज एयर-टू-एयर मिसाइल (BVRAAM)
 - मारक क्षमता: वर्तमान संस्करण ~110 किमी; लंबी दूरी के संस्करण विकासाधीन (>160-200 किमी)
 - भूमिका: शत्रु विमानों के विरुद्ध वायु प्रभुत्व
- Russian R-37**
 - प्रकार: लंबी दूरी की एयर-टू-एयर मिसाइल
 - मारक क्षमता: >200 किमी
 - भूमिका: AWACS, निगरानी विमान जैसी उच्च-मूल्य वाली संपत्तियों को निशाना बनाना

अन्य विकास -

- प्रोजेक्ट कुशा: स्वदेशी लंबी दूरी की वायु रक्षा मिसाइल प्रणाली विकसित करने के लिए डीआरडीओ की पहल।
- रूसी S-400 ट्रायम्फ सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइल प्रणाली के दो अतिरिक्त स्काइनों की खरीद।

महत्व

- दुश्मन की हवाई रक्षा सीमा से परे हमला करने की क्षमता का विस्तार करता है।
- चीन के एचक्यू-9 और पाकिस्तान की वायु सेना के विरुद्ध प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है।
- स्वदेशी मिसाइल विकास का समर्थन करता है और आयात पर निर्भरता कम करता है।

स्रोत: द हिंदू

समाचार संक्षेप में

यूएनडीपी 'इकेटर इनिशिएटिव अवार्ड'

समाचार? धारवाड़ जिले (कर्नाटक) के बीबी फातिमा महिला स्वयं सहायता समूह (SHG) को 'इकेटर इनिशिएटिव अवार्ड' मिला है।

पुरस्कार के बारे में -

- इसे जैव विविधता संरक्षण के लिए नोबेल पुरस्कार भी कहा जाता है।
- संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP) के इकेटर इनिशिएटिव के तहत हर दो साल में एक बार दिया जाता है।
- यह पुरस्कार प्रकृति-केंद्रित जलवायु समाधान प्रदान करने, पारिस्थितिकी तंत्र को बहाल करने और टिकाऊ आजीविका को बढ़ावा देने में स्वदेशी और स्थानीय समुदायों की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करता है।

स्रोत: [द हिंदू](#)

ऑपरेशन फाल्कन

समाचार? 2025 में, असम के ऑपरेशन फाल्कन ने अब तक शून्य गैंडा शिकार की घटनाओं को हासिल किया है, 42 शिकारियों को गिरफ्तार किया है, छह प्रमुख शिकार गिरोहों को खत्म किया है और नौ शिकार प्रयासों को रोका है।

ऑपरेशन फाल्कन के बारे में -

- यह क्या है: असम पुलिस और असम वन विभाग द्वारा 2024 में गैंडे के अवैध शिकार नेटवर्क को खत्म करने और अवैध वन्यजीव व्यापार पर अंकुश लगाने के लिए एक संयुक्त शिकार विरोधी अभियान शुरू किया गया है।
- शामिल संगठन:
 - असम पुलिस - कानून प्रवर्तन, खुफिया जानकारी एकत्र करने और परिचालन निष्पादन का कार्य संभालती है।
 - असम वन विभाग - आवास निगरानी, गश्त और वन्यजीव संरक्षण पर ध्यान केंद्रित करता है।

स्रोत: [इंडियनएक्सप्रेस](#)

BNS की धारा 152

समाचार? सुप्रीम कोर्ट ने भारतीय न्याय संहिता की धारा 152 के "दुरुपयोग की संभावना" पर सवाल उठाया है।

भारतीय न्याय संहिता (BNS) की धारा 152 - प्रावधान

- यह उन सभी लोगों के कृत्यों को अपराध मानता है जो,
 - अलगाववाद, सशस्त्र विद्रोह या विध्वंसक गतिविधियों को बढ़ावा देते हैं या बढ़ाने का प्रयास करते हैं;
 - अलगाववादी गतिविधियों की भावनाओं को बढ़ावा देते हैं;
 - भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता को खतरे में डालने वाले किसी भी कार्य में शामिल होते हैं।
- उल्लंघनकर्ताओं को आजीवन कारावास या अधिकतम सात वर्ष तक की कैद और जुर्माने का सामना करना पड़ सकता है। यह एक संज्ञेय, गैर-जमानती अपराध है, जिस पर सत्र न्यायालय द्वारा विचारण किया जा सकता है।
- यद्यपि धारा 152 में "राजद्रोह" शब्द का प्रयोग नहीं किया गया है, इसे मोटे तौर पर भारतीय दंड संहिता (आईपीसी) की धारा 124A का उत्तराधिकारी माना जाता है।

स्रोत: [द हिंदू](#)

संपादकीय सारांश

भारत में अंग प्रत्यारोपण

संदर्भ

- अंग प्रत्यारोपण आधुनिक चिकित्सा की सबसे बड़ी उपलब्धियों में से एक है, जो गंभीर अंग विफलता वाले रोगियों के लिए जीवन रेखा प्रदान करता है।
 - हालाँकि, भारत में, चिकित्सा प्रगति और प्रत्यारोपण की बढ़ती संख्या के बावजूद, अंग दान की दर प्रति दस लाख जनसंख्या पर 0.8 प्रतिशत बनी हुई है - जो स्पेन और अमेरिका (>45 प्रति व्यक्ति प्रति व्यक्ति) जैसे वैश्विक अग्रणी से काफी कम है।
 - इस कमी के कारण प्रति वर्ष 5 लाख से अधिक रोकੀ जा सकने वाली मौतें होती हैं, जो सामाजिक-सांस्कृतिक बाधाओं, नीतिगत कमियों और जन जागरूकता की कमी को दूर करने की तत्काल आवश्यकता को रेखांकित करती है।

विभिन्न चुनौतियाँ क्या हैं?

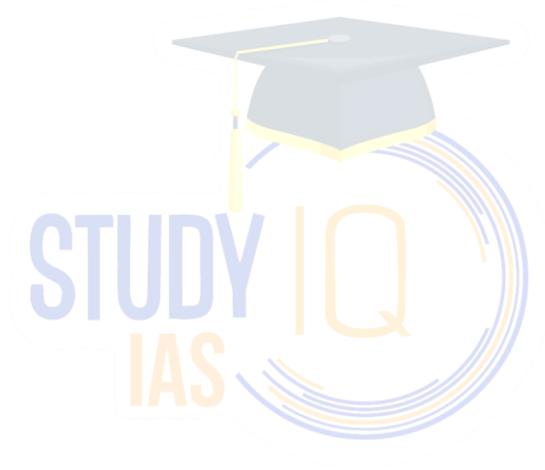
- **कम जन जागरूकता और मिथक:** शरीर के विकृत होने का डर, जिससे अंतिम संस्कार प्रभावित हो सकता है।
 - यह गलत धारणा कि अंगदान धार्मिक मानदंडों का उल्लंघन करता है।
 - अंग-हरण के लिए समय से पहले मस्तिष्क मृत्यु की घोषणा का संदेह।
- **धार्मिक एवं सांस्कृतिक संवेदनशीलताएं:** धार्मिक नेताओं के समर्थन के बावजूद, मिथक कायम हैं।
 - गलत धारणाओं का मुकाबला करने के लिए निरंतर प्रयास का अभाव।
- **मस्तिष्क मृत्यु संबंधी चिंताएं:** मानव अंग और ऊतक प्रत्यारोपण अधिनियम, 1994 के तहत चिकित्सा और कानूनी सुरक्षा उपायों की गलतफहमी।
 - मस्तिष्क मृत्यु को केवल सख्त कानूनी, नैतिक और बहु-डॉक्टर प्रक्रियाओं के बाद ही प्रमाणित किया जाता है।
- **आयु एवं स्वास्थ्य संबंधी गलत धारणाएं:** यह गलत धारणा है कि केवल युवा दुर्घटना पीड़ित ही रक्तदान कर सकते हैं।
 - **वास्तविकता:** वृद्ध दाता, प्राकृतिक मृत्यु के मामले, तथा ऊतकों (त्वचा, हड्डी, कॉर्निया, हृदय वाल्व) का दान संभव है।
- **चिकित्सा पेशेवरों की अपर्याप्त सहभागिता:** शोकग्रस्त परिवारों को प्रभावी ढंग से परामर्श देने के लिए प्रशिक्षण का अभाव।

सुझाए गए समाधान -

- **जागरूकता एवं शिक्षा:** राष्ट्रव्यापी दृश्य-श्रव्य एवं सोशल मीडिया अभियान।
 - इस उद्देश्य को मानवीय बनाने के लिए वास्तविक जीवन के दाता और प्राप्तकर्ता की कहानियाँ।
 - स्कूल एवं कॉलेज पाठ्यक्रम एकीकरण - नैतिकता एवं जीवन विज्ञान पर ध्यान केन्द्रित करना।
- **सामुदायिक स्तर पर आउटरीच:** धार्मिक अनुष्ठानों, चिकित्सा प्रोटोकॉल और दाता पात्रता पर मिथकों को दूर करने के लिए प्रशिक्षित परामर्शदाताओं द्वारा कार्यशालाएं।
- **स्वास्थ्य सेवा में क्षमता निर्माण:** संचार एवं परामर्श पर स्वास्थ्य सेवा कर्मचारियों के लिए नियमित प्रशिक्षण।
 - अस्पतालों में समर्पित प्रत्यारोपण समन्वय टीमों।
- **नीतिगत सुधार:**
 - **अनुमानित सहमति मॉडल:** स्पेन, क्रोएशिया में अपनाया गया - प्रत्येक वयस्क को दाता माना जाता है, जब तक कि वह इससे बाहर न हो जाए।
 - जनता का विश्वास बनाने के लिए शिकायत निवारण तंत्र।

- **सतत प्रतिबद्धता:** निरंतर वित्त पोषण, निगरानी और जमीनी स्तर पर सहभागिता के साथ राष्ट्रीय स्तर का मिशन।

स्रोत: [द हिंदू](#)



रोजगार सृजन के मिथक का खंडन

संदर्भ

- 1 जुलाई 2025 को, भारत सरकार ने रोजगार सृजन को बढ़ावा देने के लिए, विशेष रूप से विनिर्माण क्षेत्र में, 99,446 करोड़ रुपये के परिव्यय के साथ रोजगार लिंकड प्रोत्साहन (ELI) योजना को मंजूरी दी।
 - हालांकि इस योजना को रोजगार सृजन के लिए एक प्रमुख हस्तक्षेप के रूप में स्थापित किया गया है, लेकिन इसका डिज़ाइन समावेशिता, क्षेत्रीय असंतुलन और दीर्घकालिक स्थिरता के बारे में चिंताएँ उठाता है।

ELI योजना के प्रावधान -

- **उद्देश्य:** विनिर्माण पर विशेष ध्यान देते हुए, रोजगार सृजन को बढ़ावा देना, रोजगार क्षमता में सुधार करना तथा सभी क्षेत्रों में सामाजिक सुरक्षा को बढ़ाना।
- **रोजगार सृजन लक्ष्य:**
 - 2 वर्षों में 3.5 करोड़ से अधिक नौकरियां सृजित करने का लक्ष्य।
 - पहली बार कार्यबल में प्रवेश करने वाले 1.92 करोड़ कर्मचारी शामिल हैं।
- **प्रोत्साहन अवधि: 1 अगस्त 2025 और 31 जुलाई 2027** के बीच सृजित नौकरियों के लिए लाभ लागू।
- **योजना संरचना: दो भाग:**
 - **भाग A: पहली बार नौकरी करने वाले कर्मचारियों के लिए प्रोत्साहन**
 - ईपीएफओ में नए पंजीकृत कर्मचारियों पर लागू।
 - यदि वेतन ₹1 लाख/माह तक है तो पात्र।
 - **लाभ:** एक माह का वेतन (₹15,000 तक) दो किस्तों में।
 - आधार-आधारित भुगतान प्रणाली (एबीपीएस) का उपयोग करके प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण (डीबीटी) के माध्यम से भुगतान।
 - **भाग B: नियोक्ताओं की सहायता**
 - सभी क्षेत्रों, विशेषकर विनिर्माण में नये रोजगार सृजन को प्रोत्साहन।
 - यदि रोजगार कम से कम 6 महीने तक जारी रहता है, तो नियोक्ता को दो साल तक प्रति कर्मचारी/माह 3,000 रुपये तक मिलते हैं।
 - विनिर्माण क्षेत्र के लिए लाभ तीसरे और चौथे वर्ष तक बढ़ा दिए गए हैं।
 - भुगतान सीधे पैन-लिंकड नियोक्ता खातों में किया गया।
- **फोकस क्षेत्र:** यद्यपि यह सभी क्षेत्रों पर लागू है, लेकिन दीर्घकालिक रोजगार सृजन के लिए विनिर्माण क्षेत्र को विशेष प्रोत्साहन प्रदान किया जाता है।

योजना से संबंधित मुद्दे -

- **नियोक्ता-केंद्रित दृष्टिकोण:** श्रमिकों की बजाय नियोक्ताओं की सौदेबाजी शक्ति को मजबूत करता है।
 - पूंजी को सब्सिडी देने की नकल, पूंजी-श्रम विषमता को मजबूत करना।
- **कौशल बेमेल की अनदेखी:** केवल 8.25% स्नातकों को ही उनकी योग्यता के अनुरूप नौकरियां प्राप्त हैं; 4.9% युवाओं के पास औपचारिक व्यावसायिक प्रशिक्षण है।
 - कौशल सुधार के बिना, नियोक्ता अप्रशिक्षित कार्यबल को काम पर रख सकते हैं।
- **अनौपचारिक क्षेत्र का बहिष्करण:** ईपीएफओ से जुड़े डिजाइन के कारण अनौपचारिक क्षेत्र के 90% श्रमिक इससे बाहर हो गए।
 - औपचारिक-अनौपचारिक विभाजन बढ़ने का खतरा है।
- **प्रच्छन्न रोजगार का जोखिम:** सब्सिडी का दावा करने के लिए पुरानी नौकरियों को नई नौकरियों के रूप में पुनर्वर्गीकृत करने की संभावना।
- **क्षेत्रीय पूर्वाग्रह:** रोजगार लोच में गिरावट के बावजूद विनिर्माण पर अत्यधिक ध्यान (रोजगार हिस्सेदारी का <13%)।

- इससे महिलाओं, ग्रामीण युवाओं और सेवाओं/कृषि में केंद्रित कम कुशल श्रमिकों को हाशिए पर धकेल दिया जाता है।

विकल्प और आगे की राह -

- **कौशल अवसंरचना को मजबूत करना:** व्यावसायिक प्रशिक्षण, उद्योग-संबद्ध पाठ्यक्रम और कम कुशल श्रमिकों के लिए कौशल उन्नयन को एकीकृत करना।
- **नौकरी की गुणवत्ता और सुरक्षा:** श्रम अधिकार, सामाजिक सुरक्षा और सामूहिक सौदेबाजी की शक्ति सुनिश्चित करना।
- **अनौपचारिक क्षेत्र के लिए समावेशिता:** सूक्ष्म, लघु और अनौपचारिक उद्यमों तक लाभ पहुंचाना।
- **विविध क्षेत्रीय फोकस:** विनिर्माण के साथ-साथ सेवाओं, कृषि और हरित अर्थव्यवस्था में रोजगार को प्रोत्साहित करना।
- **दीर्घकालिक उत्पादकता वृद्धि:** कर्मचारियों की संख्या आधारित प्रोत्साहन से स्थायी रोजगार रणनीतियों की ओर बदलाव।
- **शिक्षा-रोजगार संरेखण:** श्रम बाजार की जरूरतों को पूरा करने के लिए उच्च शिक्षा में सुधार।

स्रोत: [द हिंदू](#)

